सारांश

‘देह व्यापार की राजनीति’ शोध विषय के प्रथम अध्याय में मोहनदास नैमिशराय का परिचय देते हुए यह स्पष्ट किया गया हैं। कि जिस तरह नैमिशराय का जीवन कठिनाइयों से भरा था उसी तरह की साहित्यिक संवेदना उनके साहित्य में मिलती हैं। जिस समाज से नैमिशराय के जीवन का साक्षात्कार हुआ उसकी सम्पूर्ण अभिव्यक्ति नैमिशराय के उपन्यास में मिलती है। जैसे इन्होंने भारतीयता के सन्दर्भ में जातिगत भेदभाव किस प्रकार हमारे देश को खोखला कर रही हैं, उसको देखा जा सकता हैं, दूसरी ओर स्त्रियों के साथ समाज के दोहरे चरित्र को इन उपन्यास के कहानियों के माध्यम से समझ सकते है।

दूसरे अध्याय मे देह व्यापार की परीभाषा को कई विचारकों के माध्यम से स्पष्ट करते हुए यहाँ बताया गया हैं कि देह व्यापार किसे कहते हैं, इसके बाद नारीवादी चिंतन दृष्टि पर संक्षिप्त में यह बताने की कोशिश की गई हैं कि पाश्चात्य में स्त्रियों के शोषण को लेकर किस-किस तरह की विचार धारायें थी जैसे:- रुसों, मेरी वोल्स्टोन क्राफ्ट, एलिजाबेथ केडी स्टैन्टन, एंगेल्स जेटकिन, क्रिस्टावेल पैंकहसर्ट, विलियम थाम्पसन, सिमोन द बोउवार, मरियारोसाडाल्ला कोरसा आदि लेखक के वैचारिक चिंतन पर प्रकाश डाला गया हैं। वही दूसरी ओर भारत में नारीवादी चिंतन दृष्टि कैसे जन्म ले रही थी उसकी संक्षिप्त रूप रेखा सामाजिक सन्दर्भ में प्रुस्तुत करते हुए, राजाराम राममोहनराय के द्वारा सती उन्मूलन, अग्रेजों द्वारा भारतीय धर्म की परम्परागत रूढ़िवादिता का खण्डन, सावित्री बाई फूले द्वारा शिक्षा तथा धर्म के प्रतिरोध में अपनी भूमिका का स्पष्ट करना इसके बाद माइकल मधुसूदनदत्त,महात्मा गाँधी, डॉ० भीम राव अम्बेडकर, स्वामी विवेकानंद आदि कई संगठनों के माध्यम से नारीवादी चिंतन दृष्टि को स्पष्ट करना।

तीसरे अध्याय में देह व्यापार की सामाजिक अवधारणा को स्पष्ट करते हुए स्त्रियों के साथ हो रहे, जेंडरगत भेदभाव को मोहनदास नैमिशराय के उपन्यास के संदर्भों के माध्यम से स्पष्ट किया गया है। इसके बाद प्रेम जाति को स्पष्ट करते हुए भारत में इसकें नकारात्मक पहलुओं को रेखांकित करते हुए यह बताने की कोशिश की गई हैं कि भारत म देह व्यापार में ढकेले जाने वाली स्त्रियां प्रेम जाति के छलावे के कारण कोठे तक कैसे पहुँचती हैं। उसके पश्चात् दलालों और ग्राहक की देहव्यापार में कैसे भूमिका होती है, उनको पकड़ना कठिन हो जाता हैं। जबकि देहव्यापार करने वाली स्त्रियों को कानूनी द्वारा सजा दे दिया जाता हैं। उसके बाद भारत में देवदासी प्रथा को स्पष्ट

करते हुए बताया गया हैं कि किस प्रकार हमारी ही संस्कृति में धर्म के ठेकेदार धर्म की आड़ में देहव्यापार का धंधा करते थे। उनके मंदिरों मे रहने वाली स्त्रियाँ जब तक युवा होती हैं तब-तक उन ब्राह्मणों की सेवा करती हैं जब उनकी उम्र ढल जाती है तो उन्हें निकाल दिया जाता हैं, उसके बाद वो किसी कोठे या वेश्यालयों में शरण लेती। इस प्रथा को मोहनदास नैमिशराय ने संक्षिप्त में अपने उपन्यास में स्पष्ट किया हैं।

चौथे अध्याय में महानगरीय संस्कृति में देहव्यापार का धंधा किस प्रकार फलता-फूलता हैं उसको उपन्यास के माध्यम से स्पष्ट किया गया है कि किस प्रकार महानगरों में प्रत्येक वस्तु का मूल्य है, वही स्त्री देह को बाजार किस तरह मूल्य निर्धारित करता है। इसको संक्षिप्त में समझा जा सकता हैं। इसके पश्चात् मीडिया और कानून किस तरह अपने फायदे के लिए देहव्यापार के धंधे को राजनीतिक मुद्दा बनाकर लाभ उठाना चाहते है। कानून के देख-रेख में किस तरह देह व्यापार का धंधा चलता है, इस अध्याय में आसानी से समझा जा सकता है।